परमात्म ऊर्जा

दो सूक्ष्म बंधन - व्यक्ति और साधन



सबसे रुहानी स्नेह रखना, बोलना या सेवा में सहयोग लेना व देना वह दूसरी बात है। विशेषता व गुण को देखो लेकिन इसका "ही" यह गुण बहुत अच्छा है। यह बीच में "ही" न लाओ। यह "ही" शब्द गड़बड़ करता है। इस "ही" को लगाव कहा जाता है। फिर चाहे बाहर का रूप सेवा का हो, ज्ञान-योग का हो लेकिन जब इसका "ही" योग अच्छा है, यह "ही" शब्द नहीं आना चाहिए। यह "ही" निकाल दो। यदि यह "ही" निकालेंगे तो अमूल्य हीरे बन जाएंगे। हीरे समान स्थिति जल्दी बन जाएगी। फिर तुरंत न्यारे हो जाओ। जब कर्मातीत होना है तो हर व्यक्ति, वस्तु, कर्म के बंधन से अतीत होना, न्यारा होना, इसको ही कर्मातीत अवस्था कहते हैं। कर्मातीत माना कर्म से न्यारा नहीं, कर्म के बंधन से न्यारा। न्यारा बनकर कर्म करना अर्थात् बंधन मुक्त, योग युक्त, जीवन मुक्त अवस्था। व्यक्ति और साधनों का सहारा - यह दो सूक्ष्म बंधन के कारण हैं जो कर्मातीत बनने नहीं देते। सीता ने राम को खोने के साथ-साथ अशोक वाटिका को भी खोया, फिर शोक वाटिका में कितना रोया। विशेष व्यक्ति से लगाव और साधन का प्रभाव यह दो बंधन ही दुःख का कारण हैं। अब न व्यक्ति का सहारा और न साधनों का सहारा सिर्फ एक ही अविनाशी, मेरे बाबा का सहारा, बस।

कथा सरिता

सच बोलने का साहस



गुरु नानकदेव सात्त्विक जीवन जीते तथा प्रभु-स्मरण करते थे। एक बार उनके पास एक व्यक्ति आया और बोला-"बाबा! मैं चोरी तथा अन्य अपराध करता हूँ। मेरा जीवन सुधर जाए, ऐसा कोई उपाय बताइए।" गुरु नानक जी ने कहा -" तुम चोरी या अन्य गलत काम करना बंद कर दो, तो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।" वह व्यक्ति उन्हें प्रणाम कर लौट गया। कुछ दिनों बाद वह फिर आया और बोला-" बाबा गलत काम छूट नहीं रहे।" इस पर गुरु नानक जी बोले -" भैया! तुम अपने द्वारा किए सभी गलत कामों के बारे में दूसरों को बता दिया करो।" चोर ने अगले दिन चोरी की, लेकिन उसकी दूसरों को बताने की हिम्मत ही नहीं हुई। उसे लगा कि लोग उससे घृणा करने लगेंगे। उसने सोचा दूसरों को बताने से तो यही बेहतर है कि मैं चोरी ही करना छोड़ दूँ। कुछ दिनों बाद उसने गुरु नानक जी को जाकर बताया- "बाबा आपके सुझाए तरीके ने मुझे अपराधमुक्त कर दिया है। अब मैं मेहनत की कमाई से गुज़ारा करता हूँ।"

शिक्षा गलत कर्म छोड़ने के लिए केवल संकल्प ही नहीं, बल्कि अपने कर्मों को ईमानदारी से स्वीकार करने का साहस भी आवश्यक है।

प्रजा का कल्याण ही सच्चा राजधर्म



एक राजा भगवान बुद्ध का बड़ा भक्त था। उसने सोचा कि प्रजा को सुखी रखना उसका कर्त्तव्य है, इसलिए उसने महल के द्वार पर स्वर्ण मुद्राओं से भरे थाल रखवा दिए और घोषणा करवा दी कि प्रत्येक व्यक्ति दो-दो मुट्ठी मुद्राएं ले जाए। यह सुनकर प्रजा के मन में खुशी की लहर दौड़ गई। सब अपना-अपना काम छोड़कर राजमहल के द्वार पर जाकर मुद्राएं लाने लगे। बुद्ध को यह बात पता लगी तो वे एक ब्रह्मचारी के वेश में वहाँ पहुँचे। उन्होंने दो मुट्ठी मुद्रा की उठाई और चल दिए। कुछ दूर जाने के बाद वे लौट आए और उन्होंने मुद्राएं वहीं पटक दी। राजा ने इसका कारण पूछा तो बोले -" सोचा शादी कर लूँ, पर इतनी मुद्राओं से कैसे काम चलेगा?" राजा बोला -" दो मुट्ठी और ले लो।" बुद्ध ने चार मट्ठी मुद्राएं उठा ली और चल दिए। थोड़ी देर बाद वे फिर लौट आए और बोले -" शादी करूँगा तो घर भी चाहिए।" राजा बोला -" दो मुट्ठी और ले लो।" बुद्ध मुद्राएं लेकर चल दिए, मगर फिर लौट आए और बोले -" बच्चे भी तो होंगे, उनका भी तो खर्चा होगा।" राजा ने कहा -" दो मुट्ठी और ले लो।" यह सुनकर बुद्ध अपने असली रूप में प्रकट हो गए। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। बुद्ध राजा से बोले-" राजन्! दूसरों पर निर्भर रहने से कभी किसी का कल्याण नहीं होता। इस तरह तो प्रजा आलसी व कामचोर हो जाएगी। प्रजा को परिश्रम करके आजीविका पाने का रास्ता दिखाओ। तभी प्रजा का कल्याण होगा और वह सच्चे रूप से सुखी रहेगी।" राजा को अपनी गलती का एहसास हो गया।

शिक्षा सच्चा शासक वही होता है जो अपनी प्रजा को आलसी या दूसरों पर निर्भर बनाने के बजाय मेहनत और आत्मनिर्भरता का मार्ग दिखाए।



लेह-लद्दाख। महाबोधि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर द्वारा आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय योग और ध्यान महोत्सव 2026' के समापन समारोह के पश्चात् समूह चित्र में महाबोधि रेसिडेंशियल स्कूल के शिक्षक एवं छात्राओं के साथ ब्र.कु. संगीता,नई दिल्ली,ग्रेटर कैलाश।



गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के 19वें पुण्य स्मृति दिवस एवं विश्व बंधुत्व दिवस पर विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान करते हुए रक्तदाता।



रायबरेली-उ.प्र.। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के 19वें पुण्य स्मृति दिवस एवं विश्व बंधुत्व दिवस पर विशाल रक्तदान महाअभियान के अंतर्गत इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट प्रदान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।



रुद्रपुर-उत्तराखंड। राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के 19वें पुण्य स्मृति दिवस एवं विश्व बंधुत्व दिवस पर विशाल रक्तदान महाअभियान के अंतर्गत रक्तदान शिविर के दौरान जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय रुद्रपुर रक्त केंद्र प्रभारी द्वारा आभार पत्र स्वीकार करते हुए ब्र.कु. सरोज। साथ हैं ब्र.कु. अनुराधा तथा अन्य।



काली चौकी मंडी-हि.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् देवऋषि श्रृंगा जी के पुजारी को ईश्वरीय सौगात एवं साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. दक्षा। साथ हैं कमला माता।



आनन्द सरोवर-सिरसा(हरियाणा)। हिसार मंडल कमिश्नर गीता भारती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए असिस्टेंट,गुरुग्राम निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिन्दु दीदी।



सोहना-हरियाणा। विश्व बंधुत्व दिवस पर समाज सेवा प्रभाग एवं नागरिक अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान में पंजाबी धर्मशाला में आयोजित शिविर में रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू। मौके पर उपस्थित रहे एसडीएम संदीप कुमार, डीएसपी दलीप सिंह, सरपंच राजेश, प्रोफेसर संजय गुप्ता, डॉ. रणधीर सत्यनारायण तथा अन्य।



खुर्जा-नयागंज(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के 19वें स्मृति दिवस पर 'विश्व बंधुत्व रक्तदान महाअभियान' के दौरान आयोजित रक्तदान शिविर में उपस्थित रहे ब्र.कु. नौलम, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. भविता, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. रिंकी, ब्र.कु. धीरेंद्र, ब्र.कु. सागर, ब्र.कु. कुनाल तथा अन्य।